बूढ़े भेड़िए की दावत

प्रथम संस्करण १९८१

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **विदेशी भाषा मुद्रणालय**
१९ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : **क्वोची शूत्येन (चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र)**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

बूढ़े भेड़िए की दावत

सम्पादक व चित्रकार : मेइ इङ

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

किसी जंगल में एक बूढ़ा भेड़िया रहता था। एक दिन दो मुर्गियां उसके हाथ आ गईं, जिससे उसकी खुशी का ठिकाना न रहा और वह मुंह ही मुंह बुदबुदा पड़ा : "मेरी किस्मत कितनी अच्छी है ! घर जाकर मैं अपने साथ मुर्गियां खाने के लिए भालू भैया को आमंत्रित करूंगा।"

पेड़ के पीछे छिपी एक लोमड़ी ने भेड़िए की आवाज सुन ली और दबे पांव वह भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी।

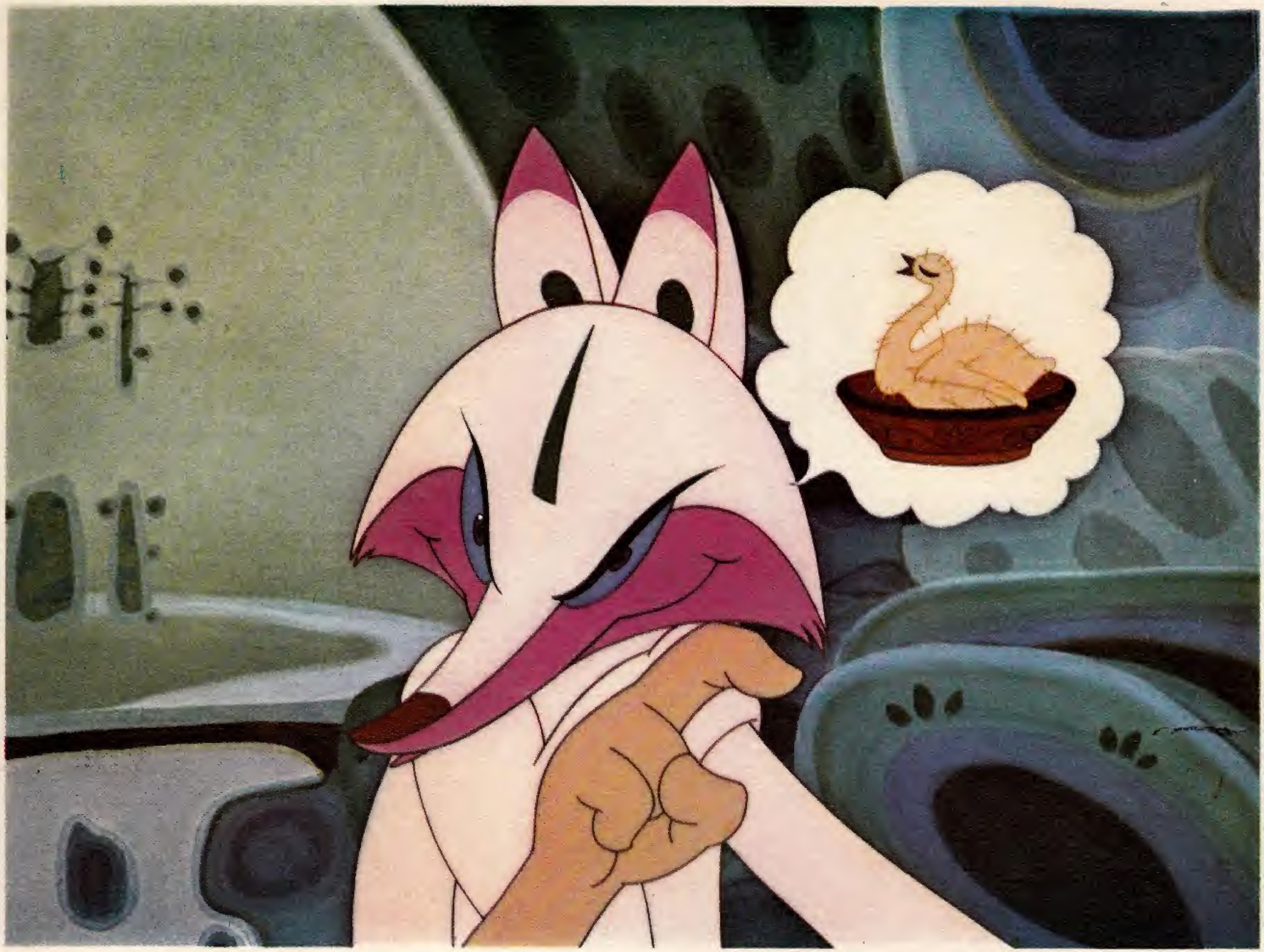

मुर्गियों को देखकर लोमड़ी के मुंह में पानी भर आया।

वह उन मुर्गियों को हासिल करने के लिए कोई धूर्ततापूर्ण युक्ति सोचने लगी।

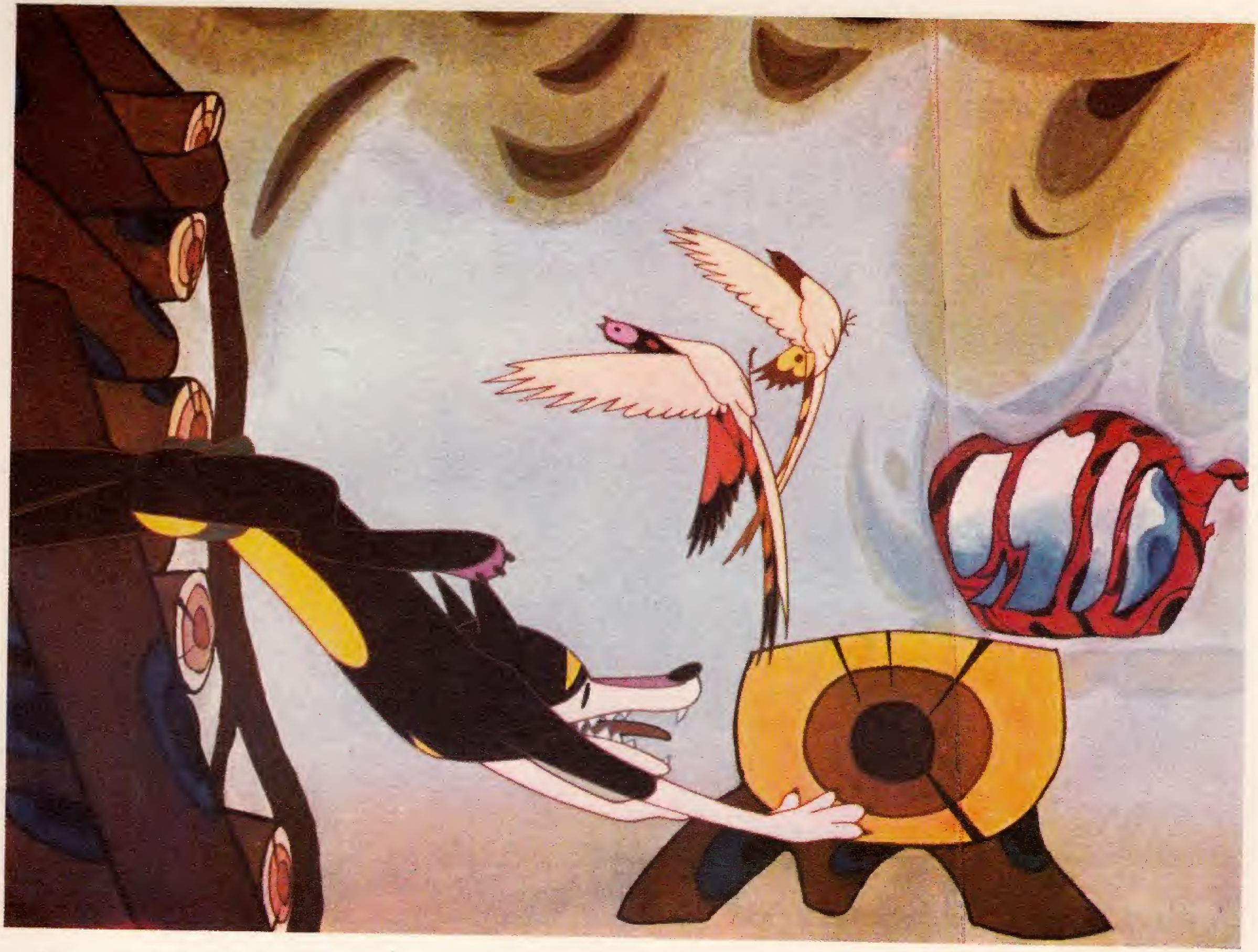

बूढ़े भेड़िए ने घर आकर मुर्गियों को एक तरफ छोड़ दिया और फिर उन्हें पकाने की तैयारी में लग गया। अचानक दोनों मुर्गियों ने घर के अन्दर उड़ना शुरू कर दिया।

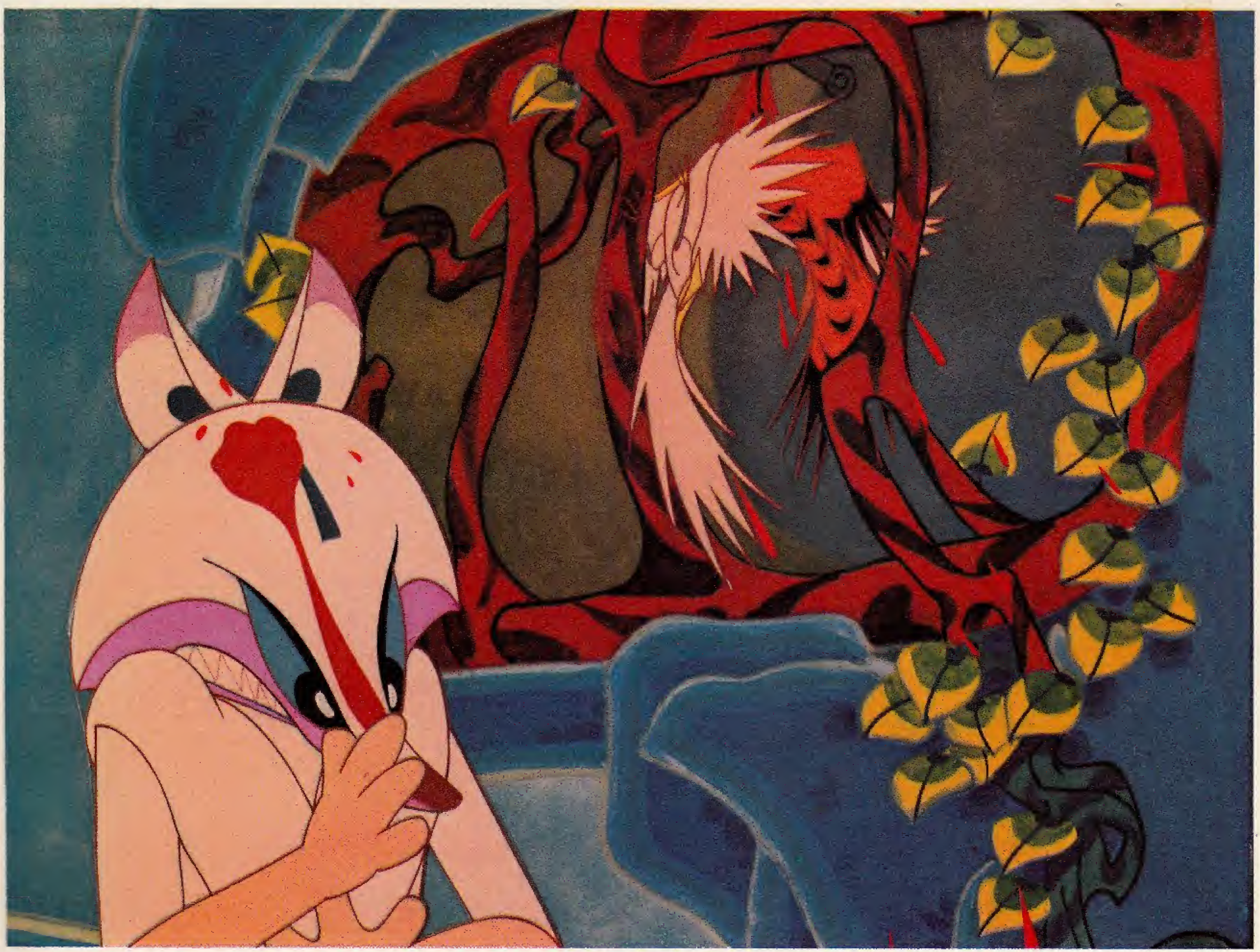

उसी समय लोमड़ी ने खिड़की के बाहर से छिपकर देखा कि दोनों मुर्गियां इधर-उधर उड़ रही हैं और बूढ़ा भेड़िया उन्हें पकड़ नहीं पा रहा है। इससे तंग आकर उसने चाकू से उनकी गर्दन काट दी। मुर्गियों के खून के कुछ छींटे खिड़की के बाहर छिपी लोमड़ी के सिर पर भी जा गिरे।

फिर भेड़िए ने मुर्गियों के पंख नोचकर अलग किए।

मुर्गियां पककर तैयार हो गईं। उनकी महक सूंघकर भेड़िया मन ही मन बहुत खुश हो रहा था।

फिर वह मौज में गाना गाता हुआ बूढ़े भालू को मुर्गियां खाने के लिए बुलाने चल पड़ा।

भेड़िए के जाते ही लोमड़ी उसके घर में चुपके से घुस गई और जिस कड़ाही में मुर्गियां रखी हुई थीं उसका ढक्कन खोल लिया।

वह कड़ाही में से एक मुर्गी उठाकर मजे से खाने लगी।

खाते-खाते लोमड़ी को भेड़िए के पैरों की आहट सुनाई दी।

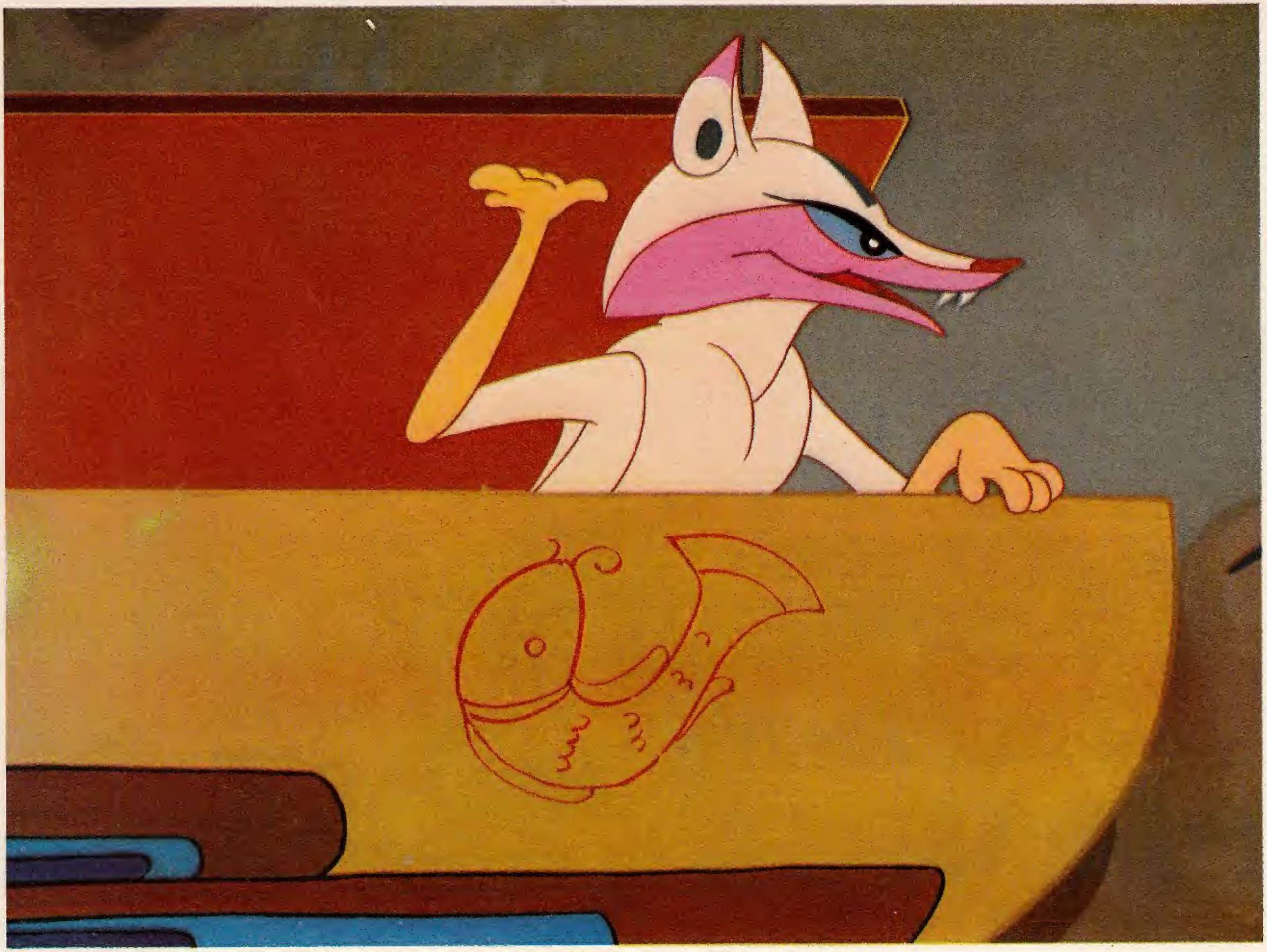

डर के मारे उसका दिल धकधक करने लगा। लेकिन वह भागकर जाए भी तो कहां, इसलिए वहीं एक सन्दूक के अन्दर छिप गई।

बूढ़े भेड़िए ने घर वापस आकर देखा कि चूल्हा बुझ गया है, इसलिए वह फिर आग सुलगाने लगा।

ईंधन खत्म हो जाने के कारण वह आंगन में आकर लकड़ी चीरने लगा।

लेकिन खुखड़ी की धार तेज नहीं थी, इसलिए उसने एक बड़े-से सान पर उसे घिसना शुरू कर दिया।

उधर भेड़िए को आंगन में जाते देख लोमड़ी संदूक से बाहर आ गई और कड़ाही से दूसरी मुर्गी भी उठाकर वहां से खिसक गई।

बूढ़ा भालू अपने दोस्त भेड़िए के घर मुर्गियां खाने के लिए खुशी से गुनगुनाता चला आ रहा था। वह अपने साथ शराब की एक बोतल भी लिए आ रहा था।

लोमड़ी एक पेड़ के नीचे छिपकर मुर्गी खा रही थी।

भालू के गुनगुनाने की आवाज सुनकर उसने फिर एक साजिश रची।

वह पत्ते से अपना एक कान ढककर भालू के पास गई और गिड़गिड़ाकर बोली : "भालू दादा, आप मुझे बचा लें ! आपकी बड़ी कृपा होगी !"

लोमड़ी ने आगे कहा : "बूढ़ा भेड़िया बहुत ही दुष्ट है। अभी कोई दस मिनट पहले मैं उसके बुलावे पर उसके यहां मुर्गियां खाने गई थी, लेकिन मेरे वहां पहुंचते ही उसने खुखड़ी से मेरा कान काट लिया। देखिए, कितना तेज दर्द हो रहा है!"

बूढ़े भालू को लोमड़ी की बात पर पूरी तरह यकीन नहीं हुआ, इसलिए उसने कुछ अविश्वास के साथ पूछा : "बूढ़ा भेड़िया क्या सचमुच ही ऐसा है ? उसने मुझे भी तो मुर्गियां खाने का न्योता दिया है। देखो, मैं उसके ही यहां तो जा रहा हूं।"

"बाप रे ! आप उसके धोखे में हरगिज न आएं ! होशियार रहें, कहीं वह आपके भी कान न काट ले !"
यह कहकर लोमड़ी ने भालू के हाथ से शराब की बोतल ले ली और वहां से रफूचक्कर हो गई।

भालू ने भेड़िए के घर के सामने पहुंचकर तिरछी निगाहों से अन्दर देखा कि बूढ़ा भेड़िया सचमुच ही अपनी खुखड़ी पैनी कर रहा है। यह देखते ही उसके होश उड़ गए और वह गिरता-पड़ता वहां से भाग खड़ा हुआ।

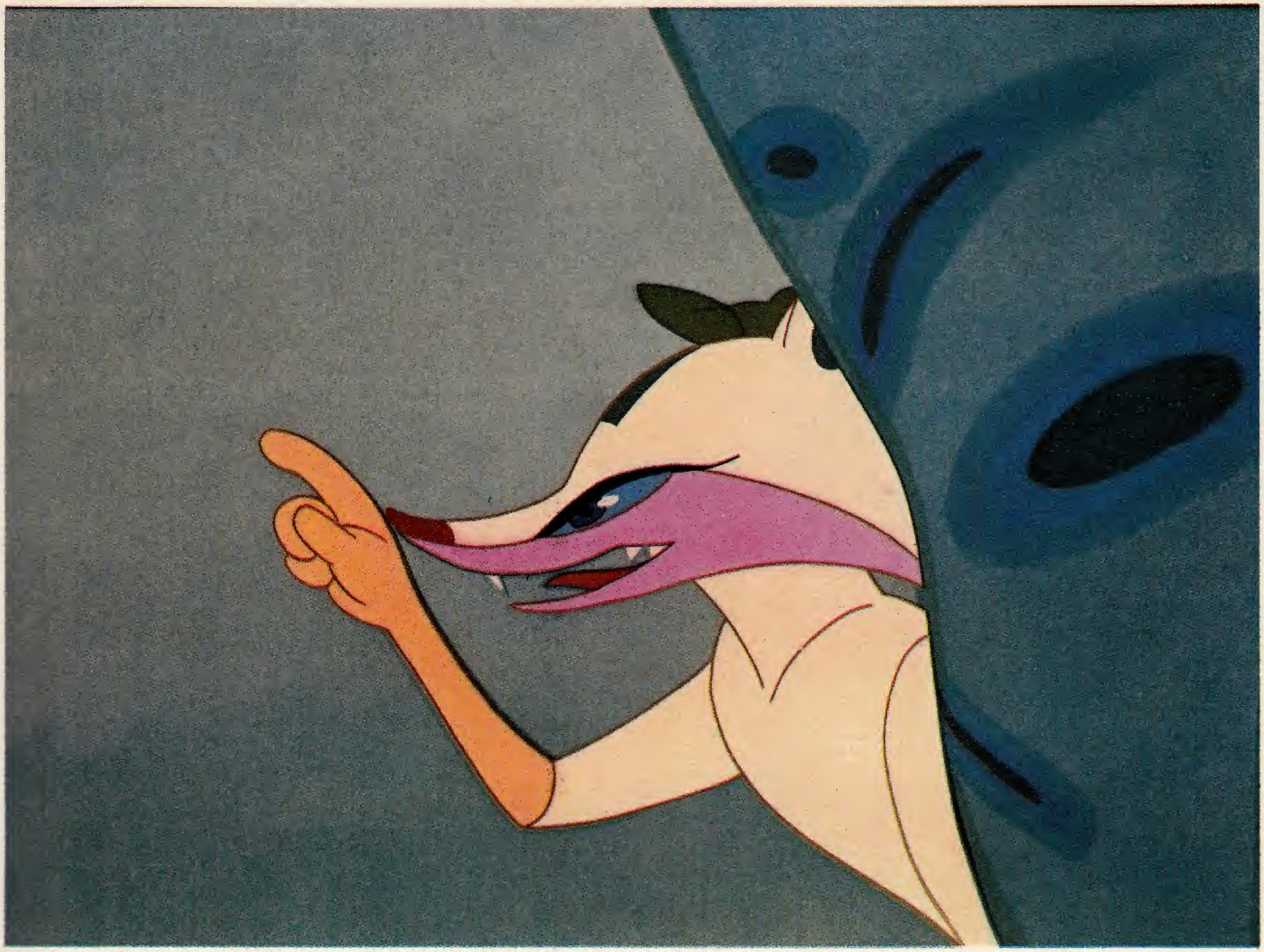

आतंकित बूढ़े भालू को इस तरह भागते देख लोमड़ी को हंसी आ गई। उसने इतमीनान से शराब पी और पूरी बोतल खाली कर दी।

इसके बाद वह भेड़िए के घर आकर उससे बोली : "भेड़िया भैया, मैंने अपनी आंखों से बूढ़े भालू को आपकी दो मुर्गियां चुराते हुए देखा है।" भेड़िए को लोमड़ी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा : "बूढ़ा भालू मेरी मुर्गियां नहीं चुरा सकता। अभी-अभी मैंने उसे मुर्गियां खाने को आमंत्रित किया है। वह मेरा पक्का दोस्त है।"

लोमड़ी बोली : "मैं सच कहती हूं। आपकी दोनों मुर्गियां भालू ने ही चट कर डाली हैं।" भेड़िए ने कड़ाही का ढक्कन उठाकर देखा तो पाया कि कड़ाही खाली और मुर्गियां नदारद हैं।

सिर पर पांव रखकर भागते हुए भालू को अचानक अपने पीछे से "रुको" की आवाज सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा कि बूढ़ा भेड़िया हाथ में खुखड़ी लिए उसका पीछा कर रहा है।

बूढ़ा भालू एक तख्ते के पुल के पार जाकर उस तख्ते को हटाने की कोशिश करने लगा, ताकि भेड़िया उसके पास न आ सके।

लेकिन वह तख्ते को हटा नहीं पाया और तब तक भेड़िया भी पुल पार करके उसके पास आ पहुंचा। भेड़िए ने भालू को खुखड़ी से मारने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया ही था कि भालू ने उसकी छाती पर एक जोर का मुक्का मारा।

बूढ़े भेड़िए ने भी गुस्से से पागल होकर भालू पर जवाबी चोट की।

बूढ़ा भेड़िया गरजकर बोला "बुड्ढे भालू, तूने मेरी मुर्गियां चुराई हैं और खुद मुझे ही मार रहा है ! चोरी की चोरी, ऊपर से सीनाजोरी ! तू डाकू है !"

भेड़िए की बात सुनकर भालू आश्चर्य में पड़ गया और बोला : "क्या कहा ? मैंने तुम्हारी मुर्गियां चुराई हैं ! झूठ, सरासर झूठ ! किसने देखा है ?"

"लोमड़ी का कहना है कि उसने देखा है।" भेड़िए का यह जवाब सुनकर भालू को असलियत का पता चल गया और वह भेड़िए से बोला : "दरअसल, हम दोनों लोमड़ी के धोखे में आ गए थे जिसने हमें लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहा।"

老 狼 请 客

梅 樱 编绘

*

外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
外文印刷厂印刷
中国国际书店发行
1981年（20开）第一版
编号：（印地）8050—2118
00090
88—H—189P

M3-P40